विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत 5 अक्टूबर 2020

वर्ग सप्तम राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

दशमः पाठः

काकस्य चातुर्यम् (कौवा की चालाकी)

परं दुर्भाग्यवशात् तस्मिन्नेव वृक्षस्य कोटरे एकः कृष्णसर्पः अपि आगत्य अवसत्।

लेकिन दुर्भाग्य से उनके वृक्ष के हौसले में एक काला सांप भी आकर रहने लगा।

कदाचित् यदा काक दम्पती आहाराय नीडात् बहिः आगच्छताम् तदैव सर्पः अवसरं दृष्ट्वा नीडं प्रविश्य एकैकं कृत्वा सर्वान् शावकान् भक्षयति स्म।

किसी समय जब कौवा पति पत्नी भोजन के लिए घोंसला से बाहर गया तब ही काला सांप अवसर को देखकर हौसला में प्रवेश कर सभी पक्षियों के बच्चे को खा रहा था।

नीडे शावकान् न दृष्ट्वा काकदम्पती सर्वत्र तस अन्विष्यताम्।

घोसला में बच्चे को नहीं देख कर कौवा पति पत्नी सब जगह अपने बच्चे को खोजा।

तौ शावकान् विना दुःखितौ आस्ताम् ।

वे दोनों बच्चे के बिना दुखित हुए।

अन्यस्मिन् अहनि वृक्षस्य अधः कृष्णसर्पः दृष्ट्वा तस्य भार्या उच्चैः अवदत् – स्वामि।

दूसरे रात वृक्ष के नीचे काला सांप देखकर उसकी पत्नी बोली- स्वामी।

पश्य गच्छन्तः तं सर्पम्।

उस रात को जाकर देखें।

नूनम् एषः सर्पः एव आवयोः शावकान् अखादत्।

अवश्य यह सांप ही हम दोनों के बच्चे को खाया है।